

भीमराव आंबेडकर जी का जाति व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष

प्रा.अजय कांबळे (कमला महाविद्यालय, कोल्हापुर स.प्राध्यापक,हिंदी विभाग)

सारांश :

डॉ. भीमराव आंबेडकर भारत के महान समाज सुधारक, विधिवेत्ता, और संविधान निर्माता थे। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त जाति-व्यवस्था के खिलाफ अपने पूरे जीवन भर संघर्ष किया। उनका उद्देश्य भारतीय समाज को जातिगत भेदभाव और छुआछूत जैसी प्रथाओं से मुक्त कराना था। डॉ. आंबेडकर ने अपने लेखन, भाषण और कानूनी कार्यों के माध्यम से सामाजिक समानता और मानवाधिकारों के लिए अपार योगदान दिया। इस शोध-पत्र में डॉ. आंबेडकर के जाति व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष, उनके विचारों, उनके द्वारा उठाए गए कदमों और उनके आंदोलन के प्रभाव पर चर्चा की जाएगी।

बीजशब्द : जाति, धर्म, मनस्मृती, पुना पैक्ट, संविधान

1. जाति व्यवस्था: एक परिचय

जाति व्यवस्था भारतीय समाज की एक पुरानी सामाजिक संरचना है, जो जन्म के आधार पर विभाजन करती है। इसमें समाज को मुख्यतः चार वर्गों में बांटा गया: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इसके अलावा, एक वर्ग अछूतों का भी था, जिन्हें अस्पृश्यता का शिकार होना पड़ता था। यह व्यवस्था हजारों वर्षों से भारतीय समाज में व्याप्त रही, जिससे निम्न जातियों के लोगों को सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से पिछड़ा रखा गया। इसीलिए “डॉ. आंबेडकर भारत में एक ऐसे वर्गहीन समाज की संरचना चाहते थे, जिसमें जातिवाद, वर्गवाद, संप्रदावाद, तथा उंच नीच का भेद न हो और प्रत्येक मनुष्य अपनी योग्यता के अनुसार सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए स्वाभिमान और सम्मान पूर्ण जीवन जी सके।”¹

2. डॉ. आंबेडकर का प्रारंभिक जीवन और जातिगत भेदभाव का अनुभव

डॉ. भीमराव आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को महार जाति में हुआ, जिसे अछूत माना जाता था। बचपन से ही उन्हें सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ा। उन्हें स्कूल में अन्य बच्चों से अलग बैठाया जाता था, पाणी पीने के लिए अलग व्यवस्था की जाती थी, और अध्यापक भी उनके प्रति भेदभाव करते थे। इस अनुभव ने उनके जीवन पर गहरा प्रभाव डाला और वे जातिगत उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित हुए।

डॉ. आंबेडकर ने अपनी शिक्षा के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता प्राप्त की। वे कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भारत लौटे, और उन्होंने जातिगत उत्पीड़न के खिलाफ अपनी लड़ाई शुरू की। वे एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने अस्पृश्य समाज पर होने वाले अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद की। उन्होंने अस्पृश्यों में आत्म-सम्मान और स्वावलंबन उत्पन्न करने के लिए उन्हें ‘शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो’ यह तीन सूत्री मंत्र दिया।

3. जाति व्यवस्था के खिलाफ आंबेडकर के विचार

डॉ. आंबेडकर ने जाति व्यवस्था को भारतीय समाज की सबसे बड़ी बुराई माना। उनके अनुसार, जाति व्यवस्था न केवल सामाजिक असमानता को बढ़ावा देती है, बल्कि यह मानवीय गरिमा और स्वतंत्रता का भी उल्लंघन करती है। आंबेडकर ने यह तर्क दिया कि जाति व्यवस्था एक धर्माधारित संरचना है, जो लोगों को उनके जन्म के आधार पर उच्च या निम्न मानती है। उन्होंने इसे मानवता के खिलाफ एक अन्यायपूर्ण और अमानवीय प्रथा के रूप में देखा।

उन्होंने अपने लेख "Annihilation of Caste" (जाति का विनाश) में इस बात पर जोर दिया कि जब तक जाति व्यवस्था को जड़ से समाप्त नहीं किया जाता, तब तक भारतीय समाज में सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना नहीं हो सकती। उन्होंने हिंदू धर्म की आलोचना करते हुए कहा कि यह धर्म जाति व्यवस्था को वैधता प्रदान करता है और इसके कारण समाज में विभाजन और अन्याय की जड़ें गहरी हैं। जबकि “डॉ. आंबेडकर के जीवन का लक्ष्य उस जातीय पदानुक्रम की वैचारिक नींव को चुनौती देना भी था जिसमें हिंदू समाज की महिलाओं को समानता, स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा से वंचित किया जाता है।”²

4. डॉ. आंबेडकर का राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष

डॉ. आंबेडकर ने अपने संघर्ष की शुरुआत शिक्षा के माध्यम से की। उन्होंने अछूतों के लिए स्कूल और कॉलेज खोले ताकि वे भी शिक्षित हो सकें और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकें। इसके अलावा, उन्होंने कई सामाजिक आंदोलनों का नेतृत्व किया, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं।

महाड़ सत्याग्रह (1927)

महाड़ सत्याग्रह डॉ. आंबेडकर द्वारा चलाया गया एक महत्वपूर्ण आंदोलन था। इसका उद्देश्य अछूतों को सार्वजनिक जल संसाधनों का उपयोग करने का अधिकार दिलाना था। 1927 में, आंबेडकर और उनके समर्थकों ने महाराष्ट्र के महाड़ में चवदार तालाब से पानी पीने का अधिकार मांगा, जो उस समय केवल उच्च जातियों के लिए आरक्षित था। यह आंदोलन जातिगत भेदभाव के खिलाफ एक महत्वपूर्ण कदम था और इसने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया।

मनुस्मृति का दहन (1927)

महाड़ सत्याग्रह के दौरान, डॉ. आंबेडकर ने मनुस्मृति का सार्वजनिक रूप से दहन किया। मनुस्मृति हिंदू धर्म का एक प्राचीन ग्रंथ है, जिसमें जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता का समर्थन किया गया है। उनका मानना था कि “सामाजिक अधिकारों के क्षेत्र में मनुस्मृति निकृष्टतम है, सामाजिक अन्याय का कोई भी उदाहरण मनुस्मृति कि तुलना में फिका लगेगा।”³ इसी कारण मनुस्मृति दहन से आंबेडकर जी ने यह संदेश दिया कि वह किसी भी ऐसे धार्मिक ग्रंथ का विरोध करते हैं, जो जातिगत भेदभाव को वैधता प्रदान करता है।

पूना पैक्ट (1932)

1930 के दशक में, डॉ. आंबेडकर ने ब्रिटिश सरकार से दलितों के लिए अलग निर्वाचन मंडल की मांग की, ताकि दलित अपने प्रतिनिधि स्वयं चुन सकें। गांधीजी ने इस मांग का विरोध किया, क्योंकि वे इसे हिंदू समाज को विभाजित करने वाला मानते थे। इसके बाद, 1932 में पूना समझौता (Poona Pact) हुआ, जिसमें आंबेडकर और गांधी के बीच एक समझौता हुआ। इस समझौते के तहत दलितों को आरक्षण का अधिकार मिला, लेकिन अलग निर्वाचन मंडल की मांग को छोड़ दिया गया। यह समझौता डॉ. आंबेडकर के संघर्ष का एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

5. संविधान निर्माण में डॉ. आंबेडकर का योगदान

भारत की स्वतंत्रता के बाद, डॉ. आंबेडकर को संविधान सभा के प्रमुख सदस्यों में से एक बनाया गया और उन्हें संविधान मसौदा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। “उन्होंने भारतीय संविधान में समानता का नारा ही नहीं दिया अपितु अवसर की समानता के साथ परिस्थिती कि समानता भी प्रदान की ओर आगे चलकर दलितों की दयनीय दशा में सुधार लाने हेतु आरक्षण के प्रावधान को सुनिश्चित करने की पहल की।”⁴ उन्होंने संविधान के माध्यम से भारत को एक समतावादी और न्यायपूर्ण समाज बनाने का प्रयास किया। भारतीय संविधान में उन्होंने दलितों और पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की, ताकि उन्हें समान अवसर मिल सकें और वे समाज में बराबरी से जीवन जी सकें।

डॉ. आंबेडकर ने संविधान में मौलिक अधिकारों और राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों का समावेश किया, जो सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय प्रदान करते हैं। उन्होंने जातिगत भेदभाव को गैर-कानूनी घोषित करने के लिए अनुच्छेद 15 और 17 का प्रावधान किया, जिसमें अस्पृश्यता को समाप्त करने और जाति के आधार पर भेदभाव को रोकने की व्यवस्था की गई।

6. बौद्ध धर्म की ओर आंबेडकर जी का झुकाव

डॉ. आंबेडकर ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में बौद्ध धर्म को अपनाने का निर्णय लिया। उनका मानना था कि हिंदू धर्म में जाति व्यवस्था को समाप्त करना असंभव है, इसलिए उन्होंने एक ऐसे धर्म की ओर झुकाव किया, जो समानता और मानवता के मूल्यों पर आधारित हो। 1956 में, उन्होंने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया। यह घटना भारतीय समाज के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई और इसने दलितों के लिए एक नई दिशा का उद्घाटन किया।

7. आंबेडकर जी के संघर्ष का प्रभाव

डॉ. आंबेडकर के संघर्ष का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके प्रयासों से न केवल दलितों को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार मिले, बल्कि भारतीय समाज में समानता और न्याय की अवधारणा भी मजबूती से स्थापित हुई। उनका आंदोलन आज भी दलित और पिछड़े वर्गों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके विचार और संघर्ष ने भारतीय समाज को जातिगत भेदभाव के खिलाफ जागरूक किया और एक समानतावादी समाज की दिशा में आगे बढ़ाया।

8. निष्कर्ष

डॉ. भीमराव आंबेडकर का जाति व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष न केवल दलितों के लिए, बल्कि पूरे भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने अपने जीवन को समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों के उत्थान के लिए समर्पित किया और भारतीय संविधान के माध्यम से एक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज का निर्माण किया। उनका जीवन और संघर्ष हमें यह सिखाता है कि समानता, स्वतंत्रता और मानव गरिमा के लिए संघर्ष करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है।

डॉ. आंबेडकर का संघर्ष आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि जातिगत भेदभाव और असमानता अभी भी समाज में व्याप्त है। उनका जीवन और विचार हमें प्रेरित करते हैं कि हम जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के लिए सतत प्रयास करें और एक समतावादी समाज का निर्माण करें।

संदर्भ ग्रंथ –

- 1) डॉ. जोशी, गोपा, (2006) भारत में स्त्री असमानता, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली वी.वी नई दिल्ली
- 2) डॉ. सुमन मंजू, (2013) दलित महिलाएं, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली
- 3) डॉ. आंबेडकर, शुद्र कौन थे ? पृष्ठ 145
- 4) कुमार डॉ विवेक, प्रजातंत्र में जाति आरक्षण एवं दलित, सम्यक प्रकाशन, पृष्ठ 132